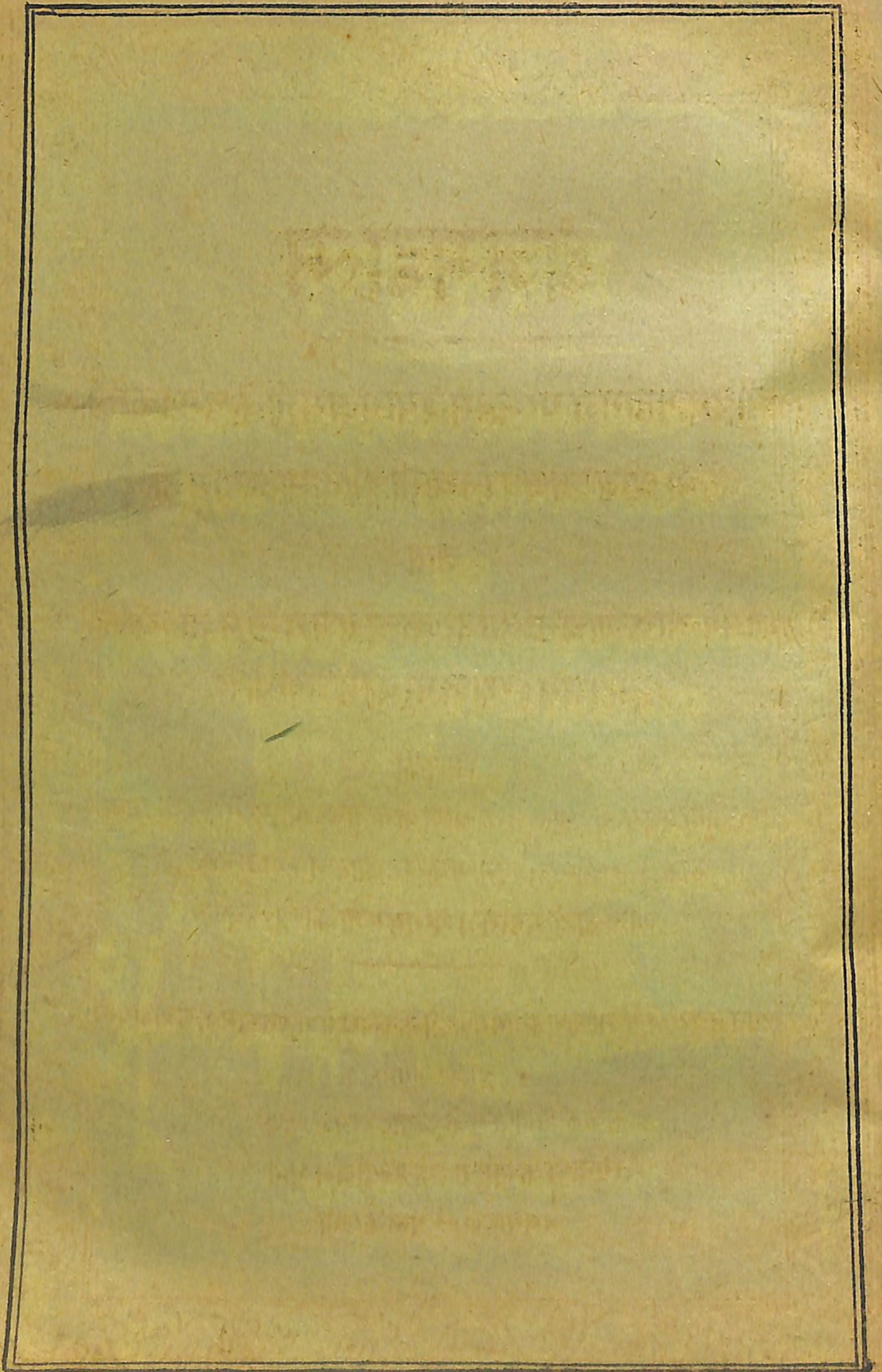


व्रजमहात्म

श्रीयुत् महाराज परमहंस श्यामदासजी के चरणकमल
सेवी श्रीवृन्दावन निवासी श्रीदामोदरदासजी
कृत
जिसमें श्रीकृष्णचन्द्र आनदकन्द व्रजचन्द्र ने जो २ लीला
व्रज में जिस २ स्थल पर की हैं लिखी हैं

जिसको
उक्त श्रीपरमहंसजी महाराज के चरण कमलानुरागी परम सेवक बाबू
करमचन्द श्रीमाल रईस मकसूदाबाद ने विष्णुभक्तों के
आनन्दार्थ महाराज परमहंसजी की आज्ञानुसार

स्थान मथुराजी में लाला रामनारायणजी के प्रबंध से मथुरा नामक यंत्रालय में
मुद्रित कराया
सेवक श्रीगोपाल के दामोदर निज नाम
रंगनाथ के बाग में श्रीवृन्दाबन धाम
प्रथमबार १००० पुस्तकें छपीं



अथमथुरामण्डलमहात्म्यः

पार्वत्युवाच

अनंतकोटिब्रह्मांडे तद्बाह्याभ्यंतरास्थि
ते॥ बिष्णोः स्थानं परंतेषांप्रधानं वरमुत्त
मं॥ यत्परं नास्ति कृष्णस्यप्रियंस्थानंम
नोरमं॥ तत्सर्वं श्रोतु मिच्छामि कथय
स्वमहाप्रभो॥१॥

अर्थ

पारवतीजी शिवजी सें पूंछती हैं॥ अनंत कोटि ब्र
ह्मांड के भीतर और वाहर जैसें सूर्य सर्वब्रह्मांडमें है
औरसबसें अलग है॥ ऐसें बिष्णु को स्थान है॥
जिससें और श्रेष्ट स्थान कृष्णको प्रिय नहीं है॥
मनके हरनेवाला ऐसे स्थान को मैं सुना चाहती
हूं॥ सो कहो हे सर्व देवनमें श्रेष्ट॥

श्लोक

ईश्वरउवाच

गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं परमानंद कारकं अत्यु
द्भूत रहस्यंच परमं परमं दुर्लभं नित्यं वृन्दा
वनं नामब्रह्मांडो परि संस्थितं ॥ पूर्णब्रह्म
सुखैश्वर्यं नित्यमानंद मव्ययम् ॥ २ ॥

अर्थ

शिवजी कहते हैं वड़ी गुप्तबात पूंछी ॥ जैसे ब्रह्म
गुप्तहै ऐसें वृन्दावन गुप्त है ॥ और जैसें ब्रह्म परमानं
दका कारण है ॥ ऐसें वृन्दावन है और जैसें अत्यंत
अद्भुत ब्रह्म है और दुर्लभ है ऐसें वृन्दावन ॥ धाम में
और धामीजो कृष्ण इनमें भेद नहीं जैसें धामी नित्य·
ऐसें धाम नित्य जैसें धामी ब्रह्मांड में और ब्रह्मांड में
अलग ऐसे धाम जो सुख ब्रह्म में वो धामसें ब्रह्म·
आनंद नित्य धाम आनंद नित्य ब्रह्म नाश रहित धा
म नाश रहित ॥

श्लोक

वैकुण्ठादि तदंशाङ्य स्वयं वृन्दावनं भुवि
॥ गोलोकैश्वर्यं यत्किंचि द्गोकुलं तत्प्रति

ष्ठितं ॥ वैकुण्ठादि वैभवंच द्वारिकायां प्र·
काशितं यद्ब्रह्म परमैश्वर्यं नित्यं वृन्दाव
ना श्रयं ॥

अर्थ

जैसें कृष्णके अंश ब्रह्मा आदिक हैं। ऐसें वृन्दाव
नके अंश वैकुंठ आदिक लोक हैं वृन्दावनस्व·
यंहै ॥ इस भूमी में और गोलोक का वैभव जोहै वो
गोकुल में है ॥ वैकुंठ का वैभव द्वारिकामेंहै ॥ और जो
ब्रह्मका परम वैभव है वो वृन्दावन में है ॥

श्लोक

कृष्णधाम परंतेषां वनं मध्ये विशेषतः ॥
तस्मात्त्रैलोक्य मध्येतु पृथ्वी धन्येति बि·
श्रुता ॥ यस्यान्माथुर पुरकं नाम बिष्णोरे·
कांत बल्लभं ॥ निगूढ़ं बिविधंस्थानंपुर्य्या
भ्यंतर संस्थितं ॥

अर्थ

कृष्णका धाम गोकुल आदिक में श्रेष्ट वृन्दावनहै ॥
तीनों लोकमें पृथ्वी धन्यहै जहां मथुरा पुरी है ॥ कृष्ण
की बड़ी प्यारी है। और अनेक स्थान गुप्त पुरी के भीतरहै

श्लोक

सहस्त्र पत्र कमला कारं माथुर मंडलं ॥ वि-
ष्णुचक्र परिभ्रामद्धायद्वैष्णव मद्भुतं ॥ क-
र्णिका पर्णबिस्तारं रहस्यं इ द मीरितं ॥ प्रधा
नं द्वादशारण्यं महात्म्यं कथितं क्रमात् ॥

अर्थ

हज़ार दलके कमल के माफिक मथुरामण्डल है ॥ चौ
रासी कोसमें बिष्णु के चक्रपर रचनाहै ॥ विष्णुतेजरू
पचक्र है ॥ बड़ा अद्भुत है ॥ अब इस कमल के फूल के
पत्ता वर्णन करते हैं ॥ मुख्य बार हवन कहते हैं क्रमसें
महात्म सहित ॥

श्लोक

भद्रश्री लोहभांडीर महाता लखदीरकः ॥ ब
हुलं कुमुदं काम्यं मधुवृन्दावनंतथा ॥ अ-
न्यच्चो पवनं प्रोक्तं कृष्ण क्रीड़ारसस्थलम्
कदंब खंडकं नंदीश्वरं निम्बारण्यं तथा ॥

अर्थ

भद्रवन श्रीवन लोहबन भांडीरबन महाबन तालबन ख
दिर बन बहुलावन कुमुदवन कामवन मधुवन वृन्दा

वन ।। अवबारह उपवन कहतेहैं कृष्णके रास करने-
केस्थान कदंबखंडीनंदीश्वर निम्बबन ।।

श्लोक

नंद नंदन खंडं चपला सा शोक केतकी ।।
सुगंधमादनं कैलसम्रुतं भोजन स्थलं ।।सु
खप्रसाधनं वत्स हरणं शेष शायिनं श्याम
पुर्योदधिग्रामं चक्रभानु परं तथा ।।

अर्थ

नंद नंदन खंडी पलासवन अशोकवन केतकीबन·
सुगंधमादन बन कैलस म्रुतवन भोजन थारी सुखप्र
साधनस्थान है वत्साहरण स्थान ।। शेष शायिहै ज
हांब्रजबा सिन को वैकुंठ दर्शन करायाहै ।। एक श्या-
मपुरी है दधि गाम है चक्रभानु स्थान है ।। जिसको ब
रसाना कहते हैं वृहदबन भी कहते हैं ।।

श्लोक

शंकेतं द्विपदंचैव बालक्रीडन धूसरं ।। के
मद्रुमं सुललितं मुत्सकं चापिकाननम् ।।
नाना बिधरसक्रीड़ा नानालीलारसस्थ
लं ।। नागबिस्तर बिष्टंभं रहस्य द्रुम मीरितं ।।

अर्थ

संकेत स्थानहै द्विपद स्थानहै जहां बालक्रीडा करीहै ॥ धूसमें श्री अंगशोभा को प्राप्त भया है ॥ दोमन बनहै ॥ जहां राधाकृष्णदोनों मिलतेथे ॥ बड़ा रमणीक है॥ सुत्सकवन है जहां राधिकाजीनें मान धारण किया है॥ और नाना क्रीड़ा करी रास आदिक कियाहै कमल का विस्तार कहा ॥

श्लोक

सहस्त्रपत्र कमलं गोकुलाख्यं महत्पदम्॥
कर्णिका तन्महद्धामं गोबिंदस्थान सुत्तमं॥
तत्रोपरि स्वर्ण पीठं मणि मंडप मंडितं॥ क-
र्णिकायां क्रमादिक्षु बिदिक्षु दलमीरितं॥

अर्थ

हजार पत्रके ऊपर गोकुल वर्णन की जहां नंद भमन है श्रेष्ठ॥ अब कमलके बीचमें जो केशरा होता है॥ ता-कों वर्णन करतेहैं॥ इस केशरा के बीच में गोविंद का स्थान है श्रेष्ठ॥ इसके ऊपर सोनेका सिंहासन है॥ म-णिन का मंडप है॥ अब केशरा के दिसा बिदिसा अर्थात चारोंदिशामें और चारों कोनेन में जोजो स्थान हैं॥

तिनको कहतेहैं ॥

श्लोक

यदह्न दक्षिणे प्रोक्तं परगुह्यो तमोतमं ॥ त
त्रोपरि स्वर्णपीठे मणिमंडप मंडितं ॥ तस्मि
न्दले महापीठं निगमागमदुर्गमे ॥ योगींद्रै
रपि दुःप्राप्यं सर्वात्मा यच्च गोकुलम् ॥

अर्थ

दक्षिण दिशामें जो दल कहा परम गुह्य है ॥ इसके
ऊपर सोने की सिंहासन है ॥ मणीन का मंडप है ये
सिंहासन वेद पुरान नहीं कह सक्ते ॥ योगी इन्द्र भी
नहीं प्राप्त होते सब स्थानन में श्रेष्ठ है ॥ जैसे कृष्ण
सबकी आत्मा हैं ऐसें गोकुल है ॥

श्लोक

द्वितीयं दलमग्नेया तद्ह हस्पंदनं तथा ॥
निकुंज कज दुर्वार कुवी छोन कुलेस्थितौ
॥ पूर्वदलं तृतीयंच यत्प्रधानसमुत्तमम् ॥
गंगादी सर्व तीर्थां तुस्पर्शाच्छत गुणं स्मृतं ॥

अर्थ

दूसरा दल अग्नी कोनेमें जो है वहां निकुंज विहार हो

ताहै ॥ निकुंज में भी परम एकांत स्थान राधा कृष्ण काहै ॥ शय्यास्थानहै ॥ पूर्वके तरफ जो दलहै वोती सराहै ॥ सबसें श्रेष्टहै ॥ जहां केशी घाट है ॥ इस स्थानके स्पर्श में गंगा आदिक तीर्थसे सौगुणा फलहै ॥

श्लोक

चतुर्थे दलमें शान्यां सिद्धपीठे पितत्प्रदं ॥
व्यायामनुतना गोपी तत्र कृष्णं पतिं लेभे ॥
वस्त्रालंकारहरणंत् दले समुद हृतं ॥ उत्त
रे पंचमं प्रोक्तं दलं सर्वद लोत्तमम् ॥

अर्थ

ईशान कोनेमें चौथा दलहै ॥ सिद्धि सिंहासनहै ॥ कृष्णके प्रासकरने वाराहै ॥ साधन सिद्धा गोपी कृष्ण-पती प्रासभई । जहां चीरहरण कियेहैं वहां उत्तरके तरफ पंचम दलहै सबसें श्रेष्ट ॥

श्लोक

द्वादशादित्य वद्दलं दलं चकर्णिकासम
॥ वाय व्यां दलषष्टं च तत्र कालीहृदः स्मृतः

अर्थ

जहां बारह सूर्य तपेहैं ॥ केशरा समान है सूर्य घाटवा

षुदिसा में काली हृद है ॥ ए ॥ छटमा दल है ॥

श्लोक

सर्वोतम दलं चैव पश्चिम सप्तमं स्मृतं ॥
यज्ञपत्नीगणानांच तदाप्मित बरप्रदं ॥ अ
त्रासुरोपि निर्वाणं प्रापत्र दशदुर्ल्लभं ॥

अर्थ

सर्व दलों से श्रेष्ठ दल पश्चिम में सात वा दल है ॥ जहां चौवेन की स्त्री बांछित बर पाती भई ॥ इसी जगह अघासुर मोक्ष पाता भया जो देवतन को दुर्ल्लभ है ॥ औ सो भतरोंड़ स्थान है ॥

श्लोक

ब्रह्म मोहन मत्रैब दलं ब्रह्म हृदा वहम ॥
नैऋत्यां तु दलं प्रोक्त मष्टमं व्योमघातनं ॥
शंकर मधिष्टा नंदलं ऽष्टं गोपीश्वराभिधं ॥
तद्बाह्ये षोडश दलं श्रिया पूर्ण तमीश्वरं ॥

अर्थ

जहां ब्रह्म कुंड है ॥ इसी जगह ब्रह्मा को मोह भया है नैऋत दिशा में अष्टम दल है जहां व्योमासुर को मारा है ॥ इसी दल में गोपीश्वर हैं ॥ इसके बाहर षोड़श दल है

श्रीसहित कृष्णरहतेहै ॥

श्लोक

सर्वासुदिक्षुयत्प्रोक्तं प्रादक्षिण्यायथा क्र
मं महत्पदं महद्धामं स्वधामंतपसंज्ञकं ॥

अर्थ

चारों दिशाके स्थान कहे अब निजधाम तपका कार
ण गोवर्द्धन कहतेहैं ॥

श्लोक

प्रथमैक दल श्रेष्ठं महात्म्य कर्णिकासमं ॥
तत्रगोवर्द्धन गिरौरम्ये नित्यरसायने ॥ क
र्णिकायां महालीला तल्लीला रमगद्धरौ ॥
यत्रकृष्णोनित्यवृन्दा काननस्य पतिर्भ
वेत ॥

अर्थ

कमलके पुष्प में के चक्र होतेहैं ॥ इस सबबसें अब
दूसरा चक्र कहते हैं ॥ गोवर्द्धन प्रथम दलहै स[illegible]
दल केशरा के बराबर है ॥ गोवर्द्धन सर्व कामना के
देनेवालाहै ॥ केशरामें महा लीलाहै ॥ हरि रमण करते
हैं ॥ जहां कृष्ण नित्य वृन्दावन के स्वामीहैं ॥

श्लोक

कृष्णो गोबिंदतां प्राप्तः किमन्यैर्बहुभाषि-
तैः॥ दलं तृतीयमाख्यातं सर्वश्रेष्ठोत्तमोत्त
मं॥ चतुर्थं दलमाख्यातं महाद्भुतरसस्थ-
लं॥ नंदीश्वरवनं रम्यं तत्र नंदालयः स्मृतः

अर्थ

जहां कृष्ण गोविंद नामको प्राप्त भये और महात्म्य क्या कहना है गोवर्द्धनका॥ तीसरा दल है सबसे श्रेष्ठहै· चौथा दल कहते हैं रास करनेका नंदीश्वर वन जहां नंदगाम है॥

श्लोक

कर्णिकादलमहात्म्यं पंचमं दलमुच्यते
अधिष्ठातत्रगोपालो धेनुपालनतत्परः॥
दलं षष्टं यदाख्यातं तत्र नंदवनं स्मृतं॥
सप्तमं वकुलारण्यं दलं रम्यं प्रकीर्तितम्॥

अर्थ

केशराके पासका पंचम दल जहां गोपालजी गऊ चराते थे॥ छटमे दलमें नंदवन है॥ सप्तम दलमें बकुलावन है बड़ा रमणीक है॥

श्लोक

कामाणंच दशमं प्रधानं सर्वकारणं ॥ ब्र
ह्मप्रसादनं तत्र बिष्णुर्छद्म प्रदर्शनम् ॥ कृ
ष्णक्रीड़ारसस्थानं प्रधानं दलमुच्यते ॥ द
लमेकादशं प्रोक्तं भक्तानुग्रह कारणं ॥

अर्थ

दशमा कामबन है श्रेष्ठ सर्व कामके देने वाला ब्रह्मा
ने इसी जगह अपराध क्षमा कराया है ॥ और गोपबा
लक वत्सा आदिक सब कृष्ण स्वरूप देखे कृष्ण के
बिहार करने का स्थान है ॥ अब ग्यारहवां दल कहते
हैं जहां भक्तन के ऊपर कृपा करी है ॥

श्लोक

निर्माणं सेतु बंधस्य नाना बनमयस्थल
म् ॥ भांडीर द्वादशदलं बनं रम्यं मनोरमं ॥

अर्थ

कामवन में रामावतार की लीला दिखाई है ॥ भक्त
न को सेतु बंधन आदिक और अनेक बन हैं ॥ इ
स स्थान में बारह बादल भांडीर है ॥ मनोहर

॥ ७ ॥

श्लोक

कृष्णक्रीड़ा रतं स्तत्र श्रीदामादि भिरावृतः
त्रयोदशदलं श्रेष्ठं तत्र भक्ति कीर्तिवर्द्धनं
पंचदशदलं श्रेष्टं तत्र लोहबनं स्मृतं॥क
थितं षोडश दलं महात्म्यं कर्णिकासमं॥

अर्थ

भांडीरबन में राधा कृष्ण का बिवाह भयाहै कृष्ण-
क्रीड़ा करतेहैं॥ श्री दामा आदिक सखन सहित॥ ते-
रहवें दलमें भक्तन की कीर्ति बढ़तीहै॥ षोड़शदल काम-
हात्म्य कहा केशरा के समानहै॥ पंद्रहमें दलमें लोहबनहै

श्लोक

महावनं तत्र गीतं तत्रास्ति गुह्यमुत्तमं॥बा
लक्रीडारतस्तत्र वत्सापालैः समावृतः॥
पूतनादि वधस्तत्र यमलार्जुन भंजनं॥अ
धिष्टाता तयं बालगोपाल पंचवार्षिकः॥

अर्थ

षोडश दलमें महाबनहै॥ गुप्तस्थान है श्रेष्टबालक्री-
डा करीहै बत्सापालने वारेन के संग॥ पूतना आदिक
का बध कीयाहै॥ यमला अर्जुन का उद्धार कीयाहै

पांचबर्ष के गोपालनें ॥

श्लोक

नाम्नादामोदरः प्रोक्तो प्रेमानंदरसार्णव॥
दलं प्रसिद्धमाख्यातं सर्व श्रेष्टदलोतमं॥

अर्थ

इस स्थान में दामोदर नामको प्रासभये प्रेमरूपी समुद्र है॥ प्रसिद्ध दलहै बड़ा श्रेष्टहै॥

श्लोक

कृष्णक्रीड़ाचकिंजल्की बिहारदलसु·
च्यते॥ सिद्धिप्रधानकिंजलकदलंचस
मुदाहृतं॥

अर्थ

इसीदलमें कृष्ण जलक्रीड़ा करतेथे जल क्रीड़ा की सिद्धी देनेवालाहै॥ कभी गर्म कभी सीतल सुगंधी जितनेजलकी इच्छा करें॥ उतनाहोजाय

श्लोक

ईश्वरउवाच॥

कथितं तेप्रियतमे गुह्यागुह्योतमोतमं॥
रहस्यानांरहस्यंय दुर्लभानांच दुर्लभम्॥

त्रैलोक्यगोपितंदेवी देवेश्वरःसुपूजितं॥
ब्रह्मादिवांछितंस्थानंसुरसिद्धादिसेवितं॥

अर्थ।

शिवजी कहतेहैं॥हे प्यारी पारवती गुप्त सें गुप्त उत्तम सें उत्तम रहस्यको रहस्य दुर्लभ सें दुर्लभ॥तीनों लोक में गुप्तहै देवतन के देव पुजते हैं॥हे देवि ब्रह्मा आदिक वांछा करतेहैं॥देवता सिद्ध सेवन करते हैं॥वृन्दावनको

श्लोक

योगींद्रा सदासेव्यं तत्स्थलं ध्यान तत्परं॥
अप्सरोभिश्च गंधर्वैर्न्तत्यगीत निरंतरं॥श्री
वृन्दावनं रम्यंपूर्ण नंदरसा श्रयं॥भूमीचिं
तामणी स्तोयम मृतं रस पूरितं॥

अर्थ

योगीराज इस स्थान का ध्यान में सेवन करते हैं॥अप्सरा गंधर्व निरंतर न्त्रत्य ओर गान करते हैं॥श्रीवृंदा वन बड़ा रमणीक है॥आनंद रूप है॥रसका खान है पृथ्वी चिंतामणी है जल अमृत है रसका भरा॥

श्लोक

वृक्षंगुरु द्रुमं तत्र सुरभिवृंदसेवितं॥स्त्री

लक्ष्मी पुरुषं विष्णु तद्दंशा समुद्भवं ॥ तत्र
कैशोरवयसं नित्यं मानंद विग्रहं ॥ गतिना
ट्यकथालापंस्मित वक्त्रं निरंतरं ॥

अर्थ

छोटे छोटे वृक्ष गुरु हैं ॥ सुरभी गऊ अन के वृन्दावं-
दावन का सेवन करती हैं ॥ स्त्री और पुरुष लक्ष्मीन
रायनके अंश हैं ॥ नित्य पंद्रह बर्षके रहते हैं ॥ बिचि-
त्र जिनकी चलन है ॥ बिचित्र मनोहर कथा करते हैं
प्रसन्न मुख आनंद रूपी शरीर जिनके हैं ॥

श्लोक

शुद्धः सत्वै प्रेम पूर्णै बिश्रम बैस्तद्वनाश्र
यं ॥ पूर्णब्रह्म सुखेमग्ने स्फुर तन्मूर्त्ति तन्
मयं ॥ मत कोकिल भृंगाद्यैः कूजत्काल
मनोहरं ॥ कपोत शुक संगीत मुन्मतालि
सहस्रकं ॥

अर्थ

शुद्ध सतोगुण रूप हैं ॥ प्रेमके भरे हैं ॥ कुछ जिनको-
श्रम नहीं ॥ वृन्दावन का जिनको आश्रय है ॥ पूर्ण ब्रह्म
के आनंद में मग्न हैं ॥ कृष्णकी मूर्त्तिका अनुभव कर

तेहैं ॥ और कृष्णमयहैं ॥ मतवारे कोकिला और भ्रमर आदिक मनोहर शब्द करतेहैं ॥ कपोत शुआ और हजा रों भ्रमर मतवाले कृष्णगान करतेहैं ॥

श्लोक

भुजंगशत्रु नृत्याढ्यं सकलामोद बिभ्रमं ॥
नानावर्णैश्च कुसुमैस्त द्रेणुपरि पूरितं ॥ पू
र्णेंदु नित्या भ्यु दयं सूर्य मंदासुसेवितं ॥ अ
दुःखं दुःख बिछेदं जरामरण बर्ज्जितं ॥

अर्थ

मोर जहां नृत्य करतेहैं ॥ आनंद के मारे जिनको भ्रम होरहाहै ॥ अनेक तरह के पुष्प वृन्दावन की रज जिन के ऊपर पड़ीहै ॥ नित्य पूनों का चंद्रमा उदय होताहै ॥ सूर्य सुखरूप तपताहै ॥ कोई जहां दुःख नहीं ॥ और दुःखके नाशने वालाहै ॥ वृद्ध नहीं होते मरते नहीं ॥

श्लोक

अक्रोधगत मात्सर्य ममित्र मनहंकृतम्
पूर्णनंदा मृतरसं पूर्णप्रेम सुखार्णवं ॥ गुणा
तीतं महद्धाम पूर्णप्रेम स्वरूपकं ॥ यत्रवृ
क्षादि पुलकैः प्रेमानंदा सुबर्षितम् ॥ किं

पुनश्चेतनायुक्तोः बिष्णुभक्तोऽकिंमुच्यते॥

अर्थ

जहां क्रोध नहीं ॥ ईरसा नहीं ॥ सकमनसबका अहंकार नहीं ॥ पूर्ण आनंद है ॥ पूर्ण प्रेम है ॥ सुखका समुद्र है ॥ तीनों गुणसें रहित श्रेष्ठ धाम है ॥ पूर्ण प्रेमको स्वरूप है॥ जहां वृक्ष प्रेमके आंसू गेरते हैं ॥ जड़नका यह हाल है॥ जो चैतन्य हैं और बिष्णु भक्त हैं ॥ उनकी कहा कथा ॥

श्लोक

गोबिंदांघ्रिरज स्पर्शा नित्य वृन्दावनं भुबि।
अनंत परमानंद गोविंदस्थानमव्ययम्॥ गो
बिंद देहतो भिन्नं पूर्णब्रह्म सुखाश्रयं॥ मु
क्तिस्तत्ररजः स्पर्शात्तन्महात्म्यंकिंमुच्यते

अर्थ

गोबिंद जा भूमी में चरणन से बिचरे हैं। वृन्दावन पृथ्वीमें नित्य है॥ अनंत आनंद रूप है॥ गोविंदका स्थान और नाशरहित है॥ गोबिंदका स्वरूप है॥ पूर्णब्रह्म का सुखस्वरूप है॥ मुक्ति जा धामकी रज स्पर्श में होती है॥ और महात्म्य क्या कहना है॥

श्लोक

तस्मात्सर्वत्मना देवि हृदिस्थं तद् वनं कुरु
वृन्दावन बिहारेषु कृष्णं कैशोर बिग्रहं ॥
कालिंदी चाकरोद्यस्य कार्णि कायाप्रदि:
क्षिणं ॥ लीलानिर्माणगंभीरं जलं सौरभ:
मोहनं ॥

अर्थ

महादेवजी पारवती जी सें कहते हैं ॥ हे देवि ऐसे बनको हृदयमें करो ओर में सेमन हटाकर ॥ वृन्दावनमें कृष्ण षोडशवर्षकी अवस्थासेहमेशाविहारकरतेहैं । यमुनाजा वृन्दा वनकी प्रदक्षिणा करती है ॥ कृष्ण लीला की स्थानहै ॥ बड़ी गंभीर हैं सुगंधी वायुके मोहने वाली है ॥

श्लोक

आनंदामृतरस मिश्र मकरंद्घनालयं ॥प
द्मोत्पलाद्यैः कुसुमैर्नानावर्णसमुज्वलं ॥
चक्रवाकादि विहगैर्मंजुनाना कलस्वनैः
शोभमानंजलं रम्यं तरंगानिमनोहरं ॥

अर्थ

आनंद रूपी रस मिलाहै ॥ सुगंधकी स्थान है कमल उ त्पल आदिक पुष्प नानारंग के निर्मल ॥ चक्रवाकादि

क जलके पंछी अनेक तरह के मनोहर शब्द करते हैं ॥
इसतरह जल शोभित है तरंगन कर शोभित है यमुना ॥

श्लोक

तस्योभयत टीरम्यां शुद्ध कांचननिर्मितां॥
गंगाकोटि गुणाप्रोक्ता यत स्पर्शबराटकः॥
कर्णिकायां कोटि गुणं यत्र क्रीड़ारतोहरिः॥
कालिंदी कर्णिका कृष्णमभिन्नमे कवि ग्रहं ॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताले खण्डे वृन्दावन महा महात्म्ये कृष्ण चरित्रे एकोन सप्त मो ध्यायः॥

अर्थ

दोनों किनारे सोने के बने हैं ॥ गंगा सें सौ गुणा फल है ॥ एक कोड़ी मात्र जलके स्पर्श सें के शरामें कोटि गुणा फल जहां बिहार करते हैं ॥ एक शरीरसें कृष्ण वृन्दावनमें यमुना में हमेश क्रीड़ा करते हैं ॥

इति श्री दामोदर दासेण कृत भाषायं

शिबउवाच

श्लोक

एकदावादयन्वीणां नारदो मुनिपुंगवः।
कृष्णावतार माज्ञाय प्रययौनंदगोकुलं॥
बाल नाट्य धरं देवं ददृशेनंदवेश्मनि
शयानं गोपकन्याभिः प्रेक्ष्यमाणंसदामुदा

अर्थ

एक समय नारदजी वीणा बजाते मुनिन में श्रेष्ठ कृष्णा वतार हुवा जानकर नंद गोकुल आये॥ कृष्णकों बालक रूपदेखा नंद के घरमें शयन कर रहे हैं॥ गोपनकी कन्या खिला रहीं हैं॥ आप प्रसन्ननेत्रनसें देख रहे हैं॥

श्लोक

अथासौचेतयामासमहाभागवतो मुनिः॥
अस्य कांता भगवती लक्ष्मी नारायणस्यह
बिधाय गोपिकारूपक्रीडार्थं शार्ङ्ग ध
न्वनः

अर्थ

नारदने बिचार किया कृष्णकी कांता भी जन्मीहै॥

वहां चलो ए दोनों लक्ष्मी नारायणहैं ॥ गोपीका रूप धारणकर किसी ब्रजवासी के घर जन्मीहोगी ॥ शार्ङ्ग धनुष के धारण करनेवारे के क्रीड़ा के वास्ते ॥

श्लोक

अवश्यमवतीर्णसा भविष्यतिन संशयः॥
तामहं विविनोम्य द्यगेहे गेहे व्रजौकसां॥

अर्थ

जरूर जन्मी होगी संशयः नहीं ॥ सो मैं आज ब्रजवासीन के घर घर में ढूंढ़ोंगा॥

श्लोक

बिस्हश्यैवं मुनिवरो गेहानि व्रजवासिनां
॥प्रविवेशातिथि भूत्वा बिष्णुवुद्ध्यास पूजि
तः॥ सर्वेषां बल्लवा दीनां गोपानांच मह
वालां ददर्शश्वेतरूपिणीम्॥

अर्थ

ऐसें निश्चय करि मुनिन में श्रेष्ठ ब्रजवासिन के घरमें प्रवेशकरते भये॥ अति थी होकर ब्रज वासिन ने बिष्णुवुद्धी सें पूजन किया सवजो कृष्णके प्यारेहैं॥ एक गोपके घर में एकबाला देखी॥ श्वेतवर्ण की जैसें चंद्रमा ॥

श्लोक

सदृष्ट्वा तर्कयामास रमारूपानसंशयः ॥ प्रे
विवेशततोधीमान् नंद सख्युमहात्मनः ॥ क
स्यचिद्गोपवर्यस्य भानुनाम्नोगृहं महत् ॥
अर्चितो विधिवतेन सोपिपृच्छन्महामनाः

अर्थ

कन्याको देखकर बिचार करने लगे लक्ष्मीहै यह क-
न्यासंशयनहीं ॥ ऐसे निश्चय करि प्रवेश करते भये ॥ ब
डे बुद्धिमान नंद के सखाके घरमें बडे महात्मा भानु-
नाम गोपकुवेरके माफिक रहहै ॥ बिधिसहित पूजन
कर भानु पूछतेहैं ॥

श्लोक

सोधोत्वमसि बिख्यातो धर्मनिष्ठतयाभुवि
॥ अस्तिमेयोग्य पुत्रीतिकन्याच शुभ ल
क्षण दृष्ट्वा मुनिबरस्तांतु रूपेणाप्रतिमांभु
वि ॥ तांसमाश्लिष्य बाहुभ्यां स्नेहाश्रूणि
विमुच्यच ॥

अर्थ

भानु नारदजी सें कहतेहैं ॥ हे साधो तुम पृथ्वीसें बिख्या

तहो ॥ सर्व धर्म जानते हो ॥ एक कन्या है मेरी सो आप के मतमें कैसी है ॥ शुभ अशुभ लक्षण कहो मुनी कन्या को देखकर कहने लगे ॥ कि इसके बराबर और कोई नहीं है तीनों लोकमें हाथसें कन्या को स्पर्श करते भये प्रेमके आंसू गेरने लगे ॥

श्लोक

ततः सगद्गदं प्राह प्रणयेन महामुनिः ॥ अयं शिशुस्ते भविता कृष्णास्य संभवत्यस्या ॥ रूप परम तुष्टये ततो स्यस्तत्व माहातुं नमे शक्तिः कथंचन ॥ कदाहं त्वत्प्रसादेन अनया दिव्य रूपया ॥

अर्थ

गद्गद वानी से नारद मुनिन में श्रेष्ठ बोले ॥ यह तेरी पुत्री कृष्णकी प्रसन्नता के वास्तें इसका रूप होगा ॥ और इसकी महिमा जानने की मेरी सामर्थ नहीं हैं ॥ नारदजी कहते हैं कब तेरी कृपासें राधाका दिव्य रूप देखूंगा ॥

श्लोक

बिलोकयिष्ये कैशोर मोहनत्वां जगत्पते ॥

राधाउवाच

कथंचितेभविष्यति दर्शनं ब्रह्मवितम॥
किन्तुवृन्दावनेचापिभात्यशोकलताशु-
भा॥ सर्वकालोपिपुष्पाप्या सर्वदिग्व्या-
पिसौरभा॥

अर्थ

किशोर रूप कृष्ण के मोहने वाला कब देखोंगा॥ राधि
काजी कहती है कभी दर्शन होगा॥ हे ब्रह्म के जानने
वारे वृन्दावन में एक अशोक वृक्ष है॥ शुभ सर्व कालमे
पुष्प रहते हैं॥ सदा एकसा रहता है॥ चारों दिशामेंजा-
की सुगंध व्याप रही है॥

श्लोक

गोवर्द्धनाद दूरेण कुसुमाख्या सरस्तटे॥त
न्मुले ह्यर्द्धरात्रे तु इक्षस्य स्मानशेषत॥श्रु
त्वैवं वचनं तासुस्नेह बिह्वलचेतसा॥ इ
त्युक्ता मनसैवैता महाभागतोत्तमः॥

अर्थ

वीस कोसमें वृन्दावन है॥गोवर्द्धन के पास कुसुम सरो
वर है॥इस सरोवर के किनारे अशोक वृक्ष है॥इसके
नीचे आधीरात हमारा दर्शन संपूर्ण होगा ऐसें राधाका

वचन सुनकर प्रेममें बिह्वल चित्त राधाके वचन मनमें धा-
रणकर महाभागवत नारद ॥

श्लोक

तद्रूपमेवसंस्मृत्य प्रविष्टो गहनंवनम् ॥ अ-
शोकलतिकां मूलेमासाद्य मुनिपुंगवः ॥
प्रतीक्षमाणो देवीतातत्रैवागमनंनिशी ॥
स्थितो पिप्रेमबिकलश्चिंतयन्कृष्णाब-
ल्लभाम् ॥

अर्थ

राधा का ध्यान करते सघन बनमें प्रवेश हुए ॥ अशो-
कके वृक्षसें टिककर बैठें ॥ मुनि श्रेष्ठ ॥ देवीके आनेका
रस्ता देखते हुए ॥ रातमें प्रेम में मग्न राधाका चिंतमन करते
हुए ॥

श्लोक

अथमध्य निशाभागे युवत्यः परमद्भुता ॥
पूर्वदृष्टास्तथान्याश्चबिचित्रभरणस्वत-
दृष्टा मनसिसंभ्रांतो दंडवत्पतितो भुवि ॥

राधाउवाच

मानसे सरसिस्थित्वातपस्तीव्रमुपेयुषां ॥

जपतांसिद्धिमंत्राश्चध्यायतांहरिमीश्वरम्

इतिश्री पद्म पुराणे पाताल खण्डे राधाकृष्ण म
हात्म्ये एक सप्तमोध्यायः

अर्थ

आधीरात श्रीमती आश्चर्य रूपी सखीन कोंसंगलेकर
आई ॥ जोनारदनें पूर्व देखींथीं उनसे अद्भुत बिचित्र आ
भूषण स्वतः जैसें इन्हीं के अंगमेंसें प्रकट हुएहैं ॥ वस्त्र
आभूषण देखकरनारदजी का मन चकितहोगया॥ ल·
कड़ी के माफिक चरणोंमें पड़े॥ औरनारदजीनें श्रीमती
जीकी स्तुति कीनीहै ॥ श्रीराधिकाजी नारदजी को आ·
शीर्वाद देतीहैं ॥ तपकी प्राप्ती होय और आज्ञा करती है
मानसीगंगामें निवासकरो गोपाल मंत्रकाजप करोऔ
र हरिका ध्यानकरो ॥

इतिश्री दामोदर दासेण कृता भाषायं॥

वेदव्यास उवाच

श्लोक

मयाकृतंतपःपूर्ववहुवर्षसहस्रकं॥फल

मूलाबुशाततो प्रसन्नोस्मि वृणेस्वतं॥ त·
तोहंम ब्रुवं कृष्णं पुलकोत्फुल्ल बिग्रहः॥
त्वामहं द्रष्टुमिच्छामि चक्षुर्भ्यां मधुसूदनः

अर्थ

अंबरीष व्यासजीसें कृष्णके दर्शनको पुछतेहैं॥ कि किस तरह होय व्यासजी कहतेहैं॥ मैंने पूर्व हज़ारों बर्ष तप कियाहै॥ फल कंद जल पीकर तब कृष्ण प्रसन्नभये बोले बरमांगो॥ तब मैंने प्रसन्न होकर कहा कि तुम्हारे दर्शन किया चाहता हूं नेत्रन से हे मधुदैत्य के मारने वारे॥

श्लोक

पस्यद्य दर्शयिस्यामि स्वरूपं वेदगोपितं॥
वनं वृन्दावनं नाम नवपल्लव मंडितं॥ को
किल भ्रमरा रावं मनो भव मनोहरं॥ नदीम
पश्य कालिन्दी इंदीवर दलप्रभं॥

अर्थ

कृष्ण बोले व्यास सें देखौ आज मेरा स्वरूप बेदमें गुप्त· है॥ और वृन्दावन देखौ जो वृन्दावन के वृक्षनमें नवीन पत्ता शोभित है॥ कोकिला भ्रमर गुंजार कर रहे हैं॥ और

यमुनाको देखो नील कमल के पुष्पके पत्ताके माफि
क जाकोजलहै ॥

श्लोक

गोवर्द्धन तथापश्यत्कृष्णरामकरोद्धृतं ॥ गो
पालमवला संग मुदित वेणु वादिनं ॥ दृष्ट्वा
तिहृष्टोद्यभवं सर्वभूषणभूषणं ॥ ततोमा·
माहभगवान् वृन्दावनं घरस्वयं ॥

अर्थ

गोवर्द्धनको देखो कृष्णरामने करपर धारण कियाहै ॥
औरगोपनकी स्त्रीन के संगसें आनंद करताहूं ॥ वंशी·
बजाकर उनको आनंद करताहूं व्यासजी कहतेहैं ॥ देख
मैंनेपरमानंदभया ॥ सर्व आभूषणनसें आभूषित औरस
र्व आभूषणन कों आपको श्री अंग शोभाकर रहाहै व्या
स कहतेहैं अंबरीषसें हरिनें मेरेसें कहा वृन्दावन मेरा·
घरहै ॥

श्लोक

यदिदंमेत्वया दृष्टंसर्वरूपंसनातनं ॥ निष्क
लंनिष्क्रियं शांतंसच्चिदानंदविग्रहं ॥
पूर्णपद्मपलाशाक्षंततः परतरंमम ॥ इदमे

ववदंत्यंते वेदाः कारणं॥

अर्थ

यहजो मेरा रूप तुमने देखा सर्वव्यापीसनातनहूं।।मायाके दोषसें रहित रूप मायाके कर्म्मनसे रहित॥शांत मन आदिक रहितहूं॥नाशरहित ज्ञान स्वरूप आनंद बिग्रह हैमेरा। पूर्ण ब्रह्महूं कमल सरीके नेत्र इससें परें ओरमेरा रूपनहीं है॥इसी स्वरूप को उपनिषद कहती हैं॥

श्लोक

सत्यंचापिपरानंदं चिद्घनं शाश्वतंशिवं॥
नित्यंसेमथुरा बिद्धिवनं वृन्दावनंतथा॥य
मुनागोपकन्याश्च तथागोगोपबालकाः
ममवतारोनित्योयमात्र संशयं क्वथाः॥

अर्थ

अनादीहूं मायाके आनंदसें परे आनंदहै मेरा॥ज्योतीरूपहूं नाशरहितहूं॥तीनों गुणसें रहितहूं॥ औरमेरी मथुरा और द्वादशवन नित्यहैं ओर यमुना गोपन की कन्या औ रगाऊ गोपन के लड़के॥और मेरा अवतार नित्यहै॥संशयमतकरो इसमें॥

श्लोक

ममेष्टाहि सदाराधा सर्वज्ञोहं परात्परं॥ सर्व
कामश्च सर्वेशः सर्वानंद परात्परः॥ मयि
सर्वमिदं बिश्वं भाति माया बिजृंभितं॥ ततो
हम ब्रुवे देव जगत्कारण कारणं॥

अर्थ

मेरी इष्ट सदा राधा है॥ मैं सर्वज्ञ हूं॥ मेरे सिरपर और कोई नहीं है सर्व कामसे पूरित हूं॥ सब का ईश्वर हूं सर्व आनंद है॥ जो और किसीको नहीं॥ मेरे कार बिश्व दीख रहा है॥ माया के ब्याज मात्रसे॥ इसीसे मैं बेदमें जगत का माया का कारण बरणन किया जाता हूं॥

व्यासउवाच

श्लोक

काश्व गोप्यास्तु के गोपा वृक्षोयं कीदृशो
मतः॥ वनंच किं कोकिलाद्या नदी कायं
गिरिश्चकः॥ कोसौ बेणु महाभागो लो-
कानंदैक भाजनं॥ भगवान मांब्रवीतः प्र
सन्नवदनांबुजः॥

अर्थ

व्यासजी पूछते हैं गोपी कौन है और अशोक का वृक्ष

कौंन बन कौंन कोकिला आदिकयमुना औरगोवर्द्ध नकौनवंशीकौनहै ॥सबके आनंदकरने वाली बड़ा भागहै जा बंशीका हे भगवान प्रसन्नमुख कमल सरीके सें कहो ॥

व्यासउवाच

श्लोक

गोप्यास्तु श्रुतयोज्ञेया ऋचौवै गोपकन्य काः॥देवकन्याश्चराज्येंद्र तपयुक्ता मुमु क्षव ॥गोपालमुनयासर्वे बैकुण्ठनंदमूर्त यः॥ अनादीहरिदासोयंभूधरोनात्रसंशयः

अर्थ

भगवान् व्यासजीसें कहतेहैं॥ और व्यासजो अंवरीष सें॥ नित्यसिद्धाजोगोपीहैं॥ वेवेदकी श्रुतिहैं॥ औरइ नकीजो कन्याहैं ॥वेवेदकी रिचाहैं॥ और देवतन की कन्याहै॥ औरदंडकारण्यवासी ऋषीरामचंद्रजीका रूपदेखकर मोहित हुए।तेवेसव गोपीहुएहैं॥ गोपसब जो मुक्ति हुए मुनीलोगवेहैं।वैकुण्ठसे आकरजन्मेहैं॥ अनादीकालका हरिकादास गोवर्द्धनहै॥ संशयःनहीं अशोकवृक्ष कल्पवृक्ष यमुना ब्रजानदीहै॥कोकिला

आदिक बेदके मंत्रहैं।।हे अंब रीषराजनके इन्द्र॥

श्लोक

बेणुर्यः श्रृणुतं बिप्रं तवापि बिदितं तथा॥
द्विज आसीच्छांसमनास्तप: सत्वपरायणं
नाम्नादेवव्रतोदांत: कर्मकांड बिशारद:॥
अ श्रद्धयास्मितं हृत्वा सोग्रहीद्विजन्मनः

अर्थ

बंशीका जन्म सुनो जो ब्राह्मण बंशीभयाहै॥ व्यासजी सेंभगवान कहतेहैं॥ इसहालको तुमभी जानते हो तथा पिसुनो॥ कानकुब्ज ब्राह्मण था सो एक ब्राह्मणने यज्ञ किया उस यज्ञ में यहभीगया॥ उसब्राह्मणने तुलसी मिश्रत नैवेद्यदिया सो अश्रद्धासे उपेक्ष्या सहित ग्रहण किया॥ और गुण सबते ब्राह्मण में शुद्धमनथा॥ तपस्वी था शांतीवालाथा देवव्रतनामथा जितेइन्द्री था कर्मकाण्डमें कुशलथा॥

श्लोक

तेनपापेन संजातं बेणुत्वमति दारुणं॥ अ
होनजानंतिन रा दुराशयाःपुरींमदीयांप
रमांसनातनीं॥

अर्थ

इसीपापसेवांसभया कठोर॥ वृन्दावन गोलोक है॥ औ रजिसरस्सी सेंयशोदाने बांधे वो भक्ति का अवतार है॥ कृष्ण उपनिषद्में कहा है॥ बड़ी आश्चर्यकी बात है। स्वोटी दुराशा है॥ जिन्होंकी वेसनातनी मेरी पुरी को नहीं जानते

श्लोक

सुरेंद्रनागेन्द्र मुनींद्र संस्तुतां मनोरमां तां मथुरांपुरातनीं॥ काश्यादायो यद्यपिसंतिपुर्यस्तासान्तुमध्ये मथुरे बधन्या॥

अर्थ

इन्द्र शेषसनकादि येजा मथुराकी स्तुति करते हैं॥ मनके हरने वाली सनातन है॥ काशी आदिक औरभी पुरी हैं॥ तिनमें मथुरा धन्य है॥

श्लोक

यज्जन्म मौंजीव्रत मृत्युदाहैर्नृणां चतुर्द्धा विदधाति मुक्तिं॥ यदाविशब्दास्तपआदिनाजनाःशुभाशाया॥

अर्थ

जामथुरामें चार तरह मोक्ष होती है जिसका मथुरा में ज

न्म भया और जिस्का यज्ञोपवीत भया और जो मथुरा में दाह पावै और जिनकी म्रत्यु भई मनुष्यन को मुक्ति देती है ॥ जो तप आदिक से शुद्ध हुए है शुभ जिनकी बासना है

श्लोक

ध्यान्या निरंतरैव पश्यति ममोतमां पुरीं ॥ न
चान्यथा कल्प शतै द्विजोतमा ॥

अर्थ

वे पुरुष मथुरा को ध्यान में निरंतर देखते है ॥ मेरी श्रेष्ठपुरी को अन्यथा सौ कल्प में भी नहीं ॥ देखसक्ते हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ व्यास ॥

श्लोक

मथुरा बासिनो धन्या मान्या अपि दिवौकसां
अगन्य महिमानस्ते सर्वेएव चतुर्भुजा: ॥ मा
थुरा बासिनां येतु दोषान पश्यंति मानवा: ॥
तेषु दोषं न पश्यंति जन्म म्रत्यु सहस्रजां ॥

अर्थ

मथुरावासी धन्य है ॥ देवतन करभी मान्य है ॥ मनुष्यन की कहा कथा ॥ अपार महिमा है ॥ सब चतुर्भुज है ॥ मथुरावासिन के दोष जो देखते है और अपने दोष नहीं दे

खते पापकर्म्मों से हजारों वक्त मरते जन्मते हैं॥

श्लोक

अधुना अपि ते धन्या मथुरायें स्मरंति ते ॥ य त्रभूतेश्वरः परः यः कदापि मम प्रीत्यै ॥ न मत्यजति तां पुरीं ॥ भूतेश्वरं यो न गनपेन्नपू जयेत वास्मर दुश्चारि तो मनुष्य ॥ नैंना मपश्येत्म थुरामदीयांस्वयं प्रकाशां परदे वतास्वयं॥

अर्थ

आजकल जो मथुरा में बसते हैं ॥ मथुरा का स्मर्ण करते हैं ॥ वे भी धन्य हैं ॥ जहां भूतेश्वर श्रेष्ट एक दिन भी मेरी प्री ती से मथुरा को नहीं त्यागते हैं ॥ भूतेश्वर को जो नम स्कार पूजन नहीं करते स्मर्ण नहीं करते हैं ॥ पापी मनु ष्य वे मेरी मथुरा को नहीं देखते हैं स्वयं प्रकाश परम दे वता है मथुरा ॥

श्लोक

नकथं मापि भक्तिं सल्लभते पाप पुरुषः॥ योम दीयं परम भक्तं शिवं संपूजयेन्नहि ॥ मन्माया मोहितधियः प्रापस्ते मानवाधमा ॥ भूतेश्व

रं ननमंति नस्मरंतिस्तुवंतिये ॥

अर्थ

भगवान कहतेहैं जो पुरुष शिवजी का पूजन नहीं करैगा वो मेरीभक्ति नहीं पावैगा ॥ मेरीमायासें मोहित बुद्धीहै ॥ अधम मनुष्य जो भूतेश्वर को प्रणाम और स्मर्ण औरस्तुति नहीं करतेहैं ॥

श्लोक

बालकोपि ध्रुवो यत्रम माराधन तत्परः
प्रयस्थानं परं शुद्धं यन्न युक्तं पितामहै ॥
तां पुरीं प्राप्य मथुरां मदीयां सुरदुर्ल्लभां ॥ खं
जो भूत्वा अंधको वापि प्राणेनैव परित्यजेत् ॥
वेदव्यास महाभाग मा क्रथा संशयं क्वचित्
रहस्यं वेद शिरसां यन्म याति प्रकाशितं ॥

अर्थ

जो मथुरामें बालक ध्रुवजी मेरी आराधनासे सनातन श्रेष्ट स्थान पातेभये ॥ जो ब्रह्मा आदिको नहीं मिलसक्ता ॥ ऐसी मथुरा का सेवन करना चाहिये मेरी पुरी देवतन को दुल्र्लभहै ॥ काना अंधा आदिक जो प्राणत्यागेंगे मोक्ष पावेंगे ॥ हे वेद व्यास संशय मति करो ॥ इस

में वेदकी रहस्य और वेदका शिर मैंने तुमसे कहाहै॥

श्लोक

इदंभगवताप्रोक्त मध्यायंयः पठेच्छुचि॥श्रु
णुयाद्वापि योभक्त्या मुक्तिस्तस्यापिशाश्व
ती॥

इतिश्री पद्म पुराणे पाताल खण्डे वृन्दावना
दिमथुरामहात्म्ये कथन नामात्रि
सप्ततिमोध्यायः

अर्थ

इस अध्यायको भगवानने कहाहै॥इसका पवित्र हो
करपाठकरै अथवा श्रवणकरै मुक्ति पावै॥

इतिश्री दामोदरस्य कृताभाषायां॥

श्लोक

नित्यंवृन्दावनं नामनित्यरास महोत्सवं॥
अपश्यपरमं गुह्य पूर्ण प्रेम रसात्मकं॥ १ ॥
इदंवृन्दावनं रम्यंममधामैवकेवलं॥ ये
वसंतिममांत्यैते मृतायांति ममांतिकं॥

अत्रयागोपपत्न्याश्च निवसंस मालये॥ यो
गिन्यास्तास्तु रावंहि मम देव परायणा॥

अर्थ

वृन्दावन नित्य है रासादिक उत्सव नित्य है॥ अर्जुन को
श्रीकृष्ण दिखाते हैं परम गुप्त वृन्दावन देखो पूर्ण प्रेम को
भरा रस को घर है॥ वृन्दावन बड़ा रमणीक है मेरो धाम
है॥ इस वृन्दावन में जो मरते हैं वो मेरे पास जाते हैं॥ य
हां जो गोपन की स्त्री बसती है॥ योगिनी हैं॥ मेरी जिन-
को उपासना है॥

श्लोक

पंचयोजन मेवंहि वनं मे देव स्वरूपकं॥
कालिन्दी यं सुषुम्णा परमामृत वाहिनी
यत्र देवा भूतानां निवर्तं ते सूक्ष्म रूपतः॥
सर्वतो व्यापत श्चाहं न त्यक्ष्यामि च वनं क्व·
चित्॥ आविर्भावस्तिरोभावो वेद यत्र यु
गे युगे॥ तेजोमय मिदं स्थानं अदृश्यं च
र्मचक्षुषां॥

अर्थ

पांच योजन में वृन्दावन है देव रूप है॥ यमुना जहां

मनोहर बहती है अमृतरूपी ॥ जो वृन्दावन में देवता सू-
क्ष्मरूप सें मनुष्यन में बिचरते हैं ॥ सूर्य के माफिक में सर्व
विश्व में व्यापक हूं और वृन्दावन में मूर्त्तिमान रहता हूं ॥
जैसें सूर्य मूर्त्तिमान रथ के ऊपर बिराजमान है ॥ और जै-
सें सूर्य उदय होते हैं और अस्त होते हैं ऐसे मैं युग युग में
जन्म लेता हूं तेजोमयः वृन्दावन है चर्म चक्षु से नहीं -
दीखता ॥

श्लोक

रहस्यं मे प्रभावस्य वृन्दावनयुगे युगे ॥ ब्र
ह्मादीनां सुराणां चनद्रशंत कथंचन ॥ सा
रे वृन्दावने कृष्णः गोपी कोटिसेरावृतः ॥
तत्र गंगा पराशक्तिस्तस्यामानंद कानने ॥

अर्थ

मेरी लीला और वृन्दावन युग युग में प्रकट होता है ॥ ब्र
ह्मा आदिक देवता नहीं देख सक्ते वृन्दावन की लीला
सब वृन्दावन में कृष्ण कोटि कोटि गोपिन से सेवित हैं ॥
सर्व देविन सें गंगाजी श्रेष्ट हैं वृन्दावन में रहती हैं ॥

श्लोक

नाना सुकुसुमामोदशमीर सुरभी कृतं ॥

कलिंद तनयादिव्य तरंग शीतलं तथा ॥ स
नकाद्यैर्भागवतै संस्टष्टं मुनि पुंगवे ॥ अल्हा
दिमधुरारावैर्गोट्टंदै रभिव्रतं ॥

अर्थ

अनेक तरहके पुष्पनकी सुगंधिसें वायुनें व्याप्त कररक्खाहै ॥ यमुनाजी शीतल बहती हैं दिव्य जल है ॥ सनकादिक मुनी पर्म भागवत जा टृन्दावन का सेवन करतेहैं ॥ गऊ अनके मनोहर शब्द होरहे है ॥

श्लोक

रम्यस्त्रग्भूषणोपेतैर्न्टत्यद्भिर्वालकैर्द्टतं ॥
तत्रश्री मान्कल्पतरुर्जांबू नदपरिच्छदः
नानारत्नप्रवालाढ्यो नाना मणिफलो
ज्वलः ॥ तस्य मूले रत्नबेदी रत्नदीपित
दीपिता ॥

अर्थ

वड़ारमणीक स्वरूप मनोहर सुगंधसें शोभित आभूषणनसें भूषित न्टत्य करते बालकनके संग ॥ एक कल्प द्टक्षके नीचे जांबूनद सोनेसें शोभित ॥ नानारंग[illegible] की मणीजड़ी नानातरहके रत्नलगे निर्मल चन्द्रमाके

माफिक ऐसी सिंहासन कल्पवृक्षके नीचे रत्नोंकर प्र
काशित तीनों गुणसें रहित दिव्य ॥

श्लोक

तत्रासीनंजगन्नाथंत्रिगुणातीतमव्ययं॥
कोटिचन्द्रप्रतीकाशम् कोटिभास्करभा
स्वरं ॥ कोटिकंदर्पलावण्यंभासयंतोदि
शोदश ॥ शिलष्यमाणंचांगनाभिसदामा
नंदसर्वशः ॥

अर्थ

इस सिंहासन परजगतके स्वामी बिराजमान है ॥ तीनों
गुणसें रहित नाशरहित कोटिचंद्रमाके माफिक सुख
रूपी तेज कोटि सूर्यके माफिक प्रकाश ॥ कोटि कामदे
व के माफिक सुंदर दशों दिशाप्रकाशरहे हैं ॥ अपने ते
जसें ॥ स्त्रीनको आलिंगन कररहे हैं । सदा आनंद है रा
कसा जो देवता आदिकन को नहीं ॥

श्लोक

ब्रह्माद्यैः सनकाद्यैश्च ध्येयंभक्तवशी
कृतं ॥ मदाघूर्णितनेत्राभिर्नृत्यंतीभिमहो
त्सवे ॥ चुंबुंतीभिर्हसंतीभिःशिलष्यंतीभि

मुंईमुई॥ अवासगोपदेहाभिः श्रुतिभिः
कोटिकोटिभिः॥

अर्थ

ब्रह्मा आदिक सनकादिकन ने ध्यान कर भक्ति के वश कर रक्खेहैं॥ आनंदके मदमें नेत्र मतवाले होरहे हैं रास कररहेहैं॥ महान उत्सवहोरहाहै॥ परस्पर चुंमन करते हैं परस्परहंसतेहै परस्पर आलिंगन करतेहै बारम्बार श्रुति-रूपा कोटि कोटि गोपीहरिके संगबिहार करतीहैं॥

श्लोक

तत्पदांबुज माध्वीकचिंतभिः पटितो हृतं॥
तासांतुमध्ये यो देवी तप्तचामी कर प्रभा॥
द्योतमाना दिशः सर्वा कुर्वती विभ्र दुज्वला
प्रधानंयाभगवती मायासर्वमिदंततं॥

अर्थ

श्री कृष्ण के चरणों की मकरंद सें और अनेक तरह के गुणरूप आदिक सें गोपिनके हृदय आछादित हो रहे हैं॥ इनगोपिन के मध्यमें जो देवीहै तपाये हुए सोने के माफिक जाको रंग अपने तेजसें सर्व दिशा प्रकाश रही है॥ सिंगार रसके आनंदरूपी हट करतीहै॥ सबगोपि

न की स्वामिन है जिसमायाने यहसंसार कियाहै॥

श्लोक

सृष्टिस्थित्यंतरूपाया विद्याविद्या त्रयीपरा ॥स्वरूपा शक्ति रूपाच याचमायाच चिन्म यी-ब्रह्म बिष्णु शिवादीनां देहकारण कार णं॥चराचरं जगत्सर्वं यन्मायापरिरंभितं॥

अर्थ

जिसने सृष्टि करीहै औरजो नाश करतीहै जाकों विद्याअ विद्या कहते हैं॥इनदोकी कारण और चेतन्य शक्ति औ र देह रूपा प्रकाश रहीहै॥ब्रह्मा बिष्णु शिवादिक जामा याके आश्रेसें शरीर धारतेहैं॥चलनेवारे अचल वृक्ष· आदिक जानें सृजेहैं॥

श्लोक

वृन्दावनेश्वरी नाम्नाराधाधात्रीनुकारणा त्॥तामालिंग्य बसंतंतं मुदावृन्दा वनेश्वरं ॥अन्योन्य चुंवना श्लेषमहाबेशबिघूर्णि तं॥ध्यायेदंत धिवंतोदेवं सचसिद्धिमवा मुयात्॥

अर्थ

ऐसी वृन्दावन की स्वामिनी राधा जाको नाम जगत माता सबकी कारण ऐसी कों आलिंगन करते हुए आनंद सहित वृन्दावन के स्वामी बसते हैं ॥ परस्पर चुंमन करते हैं ॥ परस्पर आलिंगन करते हैं ॥ शृंगार रसमें नेत्र मतवाले होरहे हैं ॥ ऐसे देवको बुद्धिमान ध्यान करें सर्व सिद्धी प्राप्त होंय ॥

श्लोक

मंत्रराजमिदंगुह्यं तस्यमंत्रचमंत्रवित ॥
योजपेच्छृणुयाच्चैवस महात्मासुदुर्ल्लभः

इतिश्री पद्म पुराणे पाताल खण्डे पार्वती शिवसंवादे श्री कृष्णरूपवर्णनंनाम सप्तसमितमोऽध्याय

अर्थ

सर्व मंत्रन का राजा है ये चरित्र बड़ा गुप्त है ॥ इस रहस्य को जिसने जाना उसने सर्व मंत्र जाने ॥ इसको जो पाठ करें सुने ऐसा महात्मा दुर्ल्लभ है ॥

इतिश्रीदामोदरस्यदासेण कृताभाषायं

श्लोक

ईश्वर उ बाच

सुलभं ब्रज नारीणां दुर्लभं तन्मुमुक्षणां ॥
तं भजे नंदसूनुं यत्तत्तेजः परमं मनुः ॥ वृन्दा
वन रजो बंदे तत्रास्ति विष्णु कोटयः ॥ आनं
द किरणा वृन्दा व्याप्त बिश्व कलानिधिः

अर्थ

शिवजी कहते हैं ब्रजकी गोपिन कों ब्रह्म सुलभ है ॥
योगिन को दुर्लभ है ॥ ऐसा जो नंदका पुत्र ताको अहं
भजे ज्योती ब्रह्मको ॥ वृन्दावन की रजको नमस्कार
जा ब्रजमें ब्रह्माको गोप वालक आदिक सर्व अपना
स्वरूप दिखाते भये ॥ आनंद रूपी किरण जैसें सूर्यकी
किरण ऐसे आनंद रूपी समूह बिश्व जाकी कला ऐसे
कृष्ण ॥

श्लोक

त्रैलोक्ये पृथ्वी मान्या जंबुद्वीपं ततोवरं ॥
तत्रापि भारत बर्षं तत्रापि माथुरापुरी ॥ तत्र
वृन्दावन नाम तत्र गोपी कदंबकं तत्रराः
धा सखी वर्गस्तत्रापि राधिका बरा ॥

अर्थ

तीनों लोकमें पृथ्वी मान्यहै जामें जंबूद्वीप श्रेष्टतामें भर्तखंड श्रेष्टतामें मथुरा श्रेष्टतामें वृन्दावन श्रेष्टतामें गोपीकदंब श्रेष्टजहां चीर हरेहैं ॥ इनसब सें राधिका की सखी श्रेष्ट इनसें श्रीमतीश्रेष्ट ॥

श्लोक

मंत्ररत्न महं पूर्वजपन्कैलाश मूर्द्धनी ॥ ध्यायन्नारायणं देव मवसंगहने बने ततस्तुभगवांस्तुष्टः ॥ प्रादुरासीन्ममाग्रतः ब्रियतांवर इत्युक्ते मयाप्यहमलोचनं ॥

अर्थ

गोपीश्वर नारदजी सें अपना हाल कहतेहैं ॥ जिस तरह कृष्णकादर्शन और वृन्दावन वासभयाहै ॥ गोपाल मंत्रकाजपमें कैलाशकी शिखरपर करता और नारायणकाध्यानकर्ता सघन बनमें बसता तब भगवान प्रसन्नभये मेरे सामने प्रगट हुए ॥ भगवान बोले वरमांगो मैं नेत्रोंके सामने देखकर ॥

श्लोक

तुष्टोदेवः प्रियासार्द्धं संस्थितोगरुड़ोपरि

प्रणिपत्य सुहुश्चैव मवदंचपयपतिं ॥ पपपते
कृपासिंधुो परमानंदायिकं ॥ सर्वानंदश्रियं
नित्यंमूर्त्ति मत्सर्वतोधिकं ॥

अर्थ

राधिका सहित मेरे ऊपर प्रसन्न हुये गरुड़ के ऊपर बैठे में चरणों में प्रणाम वारम्बार करता भया ॥ दूधके समुद्र के पत्ती से मैं बोला ॥ आपका जो रूपहै हे कृपाके समुद्र परम आनंद रूप सर्व आनंद जारूपमें सदा श्री वसती है और जितनी मूर्त्तिहैं तिनमें श्रेष्ट ॥

श्लोक

निर्गुणंनिष्क्रियं शांतंब्रह्मतेति बिदुबुधा ॥
तदाहंद्रष्टुमिच्छामिचक्षुर्भ्यांपरमेश्वरः ॥
ततोममाह भगवान्प्रपन्नंकमलापति ॥ त
दव्यब्रह्मसिरूपं परोमनसिकांक्षितं ॥

अर्थ

तीनों गुणसें रहित अक्रिय शांतिमन आदिक रहितजा कों बुद्धिमान ब्रह्म कहतेहैं ऐसे रूपको देखा चाहताहूं नेत्रोंसे ॥ भगवान लक्ष्मीके पती शिवको अपना शरणागत जानकर बोले आज मेरेस्वरूपको देखोगेजो तुम्हारे

मनमें है॥

श्लोक

यमुना पश्चिमे कूले गच्छ वृन्दावनं मम॥ इ
त्युक्त्वां तर्द्दधे देवः प्रियासार्द्धं जगत्पतिः॥ अ
ह ञ्च्यागतस्तर्हि यमुनायास्तटं शुभं॥ तत्र
कृष्णं पश्याव सर्वं च सर्व देवेश्वरं॥

अर्थ

हरि कहते हैं॥ यमुना के पश्चिम किनारे वृन्दावन जाओ ऐसे कहकर अंतरध्यान होगये॥ लक्ष्मी सहित जगत के स्वामी मैं उसी वक्त यमुना के किनारे गया शुभ स्थानमें कृष्ण को देखता भया सर्व विश्वरूप को अथवा सर्व परकार सहित देवतन के देव को॥

श्लोक

गोपबेषधरं कांति किशोरबय सान्वितं॥
प्रियस्कंधेषु बिन्यस्य वमाहस्त मनोहरं॥ ह
संतं ताह्वासयं तं मध्ये गोपीकदंब के॥ छ॥
प्रहस्य च तत कृष्णो ममाह स्मृतभाषणः॥

अर्थ

गोपबेष धारण करें पंद्रह बर्ष की अवस्था राधाके कंधे मे

भुजाडाले राधाकृष्ण के कांधेमें दोनों परस्पर हंसतेहैं ॥ गोपी कदंब के नीचे मेरेको देखकर कृष्णहंसे अमृतसरी की बानी बोल्ले॥

श्लोक

अहंते दर्शने यातो ज्ञात्वा रुद्र बेथितं ॥ म·
गणोतर्दधे बिप्रतत्रैव ममपश्यत ॥ अहम·
प्यत्रतिष्ठामितदारभ्या निरंतरं ॥

अर्थ

मैं तुमको दर्शन देताभया हे रुद्र तुमको भ्रमितजानकर ·
ऐसें दर्शन देकर अंतर ध्यान होगये ॥ परकरसहित हे·
नारद उसदिन सें मैं यहां निरंतर रहताहूं गोपिश्वर॥

नारद उवाच

श्लोक

कथंमाहूयतेदेबि पाकार्थेतु यशोदया ॥ सं
तीषुपाकर्त्रीषु रोहिणीप्रमुखास्वपि ॥ ७॥

वृन्दोवाच

पूर्वंदुर्वासमोदत्तो बरस्तस्यै महामुने ॥ इति
कात्यानीव क्राच्छु तमासीन्मयापुरा

अर्थ

नारदजी वृन्दा देवीसें पूछते हैं॥ यशोदा को रसोई करने को क्यों बुलाते हैं॥ और भी तो हैं करने वाली रोहिणी आदिक वृन्दा देवी कहती है॥ पूर्व दुर्वासाजीने वरदान दिया है यशोदाको इस कारण से है महामुनी नारद ऐसे मैंने कात्यानी के मुखसे सुना है॥

श्लोक

त्वयायत्पच्यते देवि तदन्नं मदनुग्रहात्॥
मिष्टस्यदमृतस्यर्द्धि भोक्तुरायुष्करं तथा॥
इत्याकृष्य पतितां नित्यं यशोदा पुत्रवत्सला॥
आयुष्मान् मे भवेत्पुत्रस्वादु लोभा तथा सती

अर्थ

दुरवासाने कहा हे देवि जो तू रशोई बनावेगी॥ सो अन्न मेरी कृपासें बड़ा स्वादु होगा अमृत के माफिक वुद्धि के करनेवाला खाने वाले की उमर बड़ी होय इसकारणसे नित्य यशोदा पुत्र वत्सला॥ बडी उमर होवे मेरे पुत्रकी और स्वादु लोभसें पतीव्रता यशोदा॥

श्लोक

सुतउवाच

इत्युक्त्वां तां परिक्राम्य तया वापि प्रपूजितः

अंतर्द्धानंगतोब्रह्मन्नारदो मुनिसत्तम॥२०
सवन्तियेकथामेतांब्रह्म हत्यौघनाशिनीं॥
क्षणात्पूतोभवन्त्येबमाचिरेण द्विजर्षभ॥२१

इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखण्डे वृन्दावन
महात्म्येद्वाशीतमोध्यायः॥८२॥

अर्थ

सूतजीऋषीनसेंकहतेहैं ऐसेंवृन्दादेवीकाबचन सुन
करनारदजीने वृन्दाकी परिक्रमा करी वृन्दाने नारद
का पूजन किया नारद अंतर ध्यानहोगये मुनिनमेंश्रेष्ट
॥इसकथाकोजोसुनैं वोब्रह्म हत्यासें छूटे एक क्षिण
मेंहेऋषीहो

इतिश्रीदामोदरस्यकृताभाषायं॥

श्लोक

श्रीवाराहउवाच

अक्रूरेतुयतःस्नात्वा गङ्गास्ते दिवाकरे॥
राजसूयाश्वमेधाभ्यां फलंप्राप्नोतिमानवः
तीर्थराजंहिचाक्रूरं गुह्यानांगुह्यमुत्तमं॥त
त्फलंसमवाप्नोतिसर्वतीर्थावगाहनात्॥

अर्थ

श्री वाराहजी पृथ्वी सें कहते हैं अक्रूर घाट में सूर्य ग्रहण में स्नान करें राजसूय यज्ञ के फल को पावे ॥ अश्वमेध के फल को पावे तीर्थन का राजा है ॥ बड़ा गुप्त है बड़ा श्रेष्ठ है ॥ सर्व तीर्थन के स्नान के फल को पावै ॥

श्लोक

पुनरन्यत्प्रवक्ष्यामि क्षेत्रं वृन्दावनं मम ॥ त
त्राहं क्रीड़यिष्यामि गोभिर्गोपालकैः सह
सुरम्यं सुप्रतीतं च देवानामपि दुर्ल्लभं ॥ तत्र
कुंडे महाभागे वहु गुल्मलतावृते ॥

अर्थ

और कहता हूं अपना क्षेत्र वृन्दावन जहां मैं क्रीड़ा करता हूं गऊन कर और गोपालन कर वड़ा रमणीक है मन के हरनेवाला है देवतन कों दुर्लभ है ॥ जहां ब्रह्मकुंड है वहुत लता हैं छोटे वड़े ॥ इनकर आच्छादित है ॥ हे बडे भागवाली पृथ्वी ॥ किसी शास्त्र में कहा है कि प्रयाग ब्राह्मण का रूप धारकर आया यातें ब्रह्मकुंड नाम भया

श्लोक

तत्र स्नानं प्रकुर्बीत एकरात्रोषितो नरः ॥

गंधर्वैरप्सरोभिश्चक्रीड़मानसमोदते॥
सूर्यतीर्थेतुवसुधेद्वादशादित्यसंज्ञके॥
कालीयोरमते तत्रकालिंद्याःसलिलेशभे

अर्थ

इसकुंडमें स्नानकरै एकरात्रिवासकरैगंधर्वनकर अप्स रनकर क्रीडाकरै आनंदकरै॥ और सूर्यघाटजहां बारह सूर्य आयेहैं जहां काली रमण करताहै॥ कालिन्दी के शुभजलमें॥

श्लोक

आदित्यो दर्शितो भूमे शीतार्त्तेनमयात
दा॥ द्वादशास्तुतदादित्याःतपंतिममस
न्निधौ॥कालीयोदमतेस्तत्रआदित्याः
स्थापितामया॥ वरंव्रणीध्वंभद्रंवोयद्वा
मनसिवर्ततै॥८॥

अर्थ

जिसवक्त कालीकादमन कियाहै॥ उसवक्त शीतनिवारणके वास्तें बारह सूर्य मैंने बुलायेहैं॥ जबसें मेरे सामने द्वादशसूर्य तपते हैं॥कालीके दमनके वक्त सूर्यस्थापनकियेहैं मैंने॥सूर्यनसें मैंनेकहाजो तुम्हारे

मनमें होयसो बरमांगो ॥

आदित्यऊचु

श्लोक

वरं ददासि देवेश बराईयदिवावयं ॥ अस्मिं
स्तीर्थे वरेस्थान मस्माकं संप्रदीयतां ॥ आ
दित्यानांवचः श्रुत्वाततोहंवाक्यमब्रुवम्
॥द्वादिशादित्य संज्ञं हि स्थानमेतद्भविष्यति

अर्थ

सूर्य कहतेहैं हे देवन के देव जो वरदेते हैं और हम बरके योग्यहैं तो इस श्रेष्ट तीर्थ में हमको स्थान दीजिये ॥ आदित्यःनका बचन सुनकर मैंने कहा द्वादश आदित्य संज्ञाका स्थानभया आजसें ॥

श्लोक

चैत्रमासेनरः षष्ठीशुक्लापक्षेवसुंधरे ॥ त
स्मिंस्नातोनरोदेबिसर्वान्कामानवाप्नुया
त ॥ आदित्येहनिसंक्रांतौ अस्मिंस्तिर्थेव
सुंधरे ॥ मनसाभीप्सितान्कामान्संप्राप्नो
तिन संशयः ॥

अर्थ

चैत्रमास में शुक्ल पक्षकी छठ के दिन सूर्यघाट स्नान करै ॥ सब कामना सिद्धि होंय ॥ रविवार को सं· क्रान्तको ॥ इस तीर्थ में स्नान करै ॥ मनके मनोर्थ सिद्धि होंय संशय नहीं ॥

श्लोक

सूर्यतीर्थे नरः स्नातो दृष्ट्वा दित्यान्वसुंध
रे आदित्यभवनं प्राप्य कृतकृत्यः समोद
ते ॥ अथात्र मुंचते प्राणन्मम लोकं सगच्छ
ति ॥ पुनरन्यत्प्रवक्ष्यामि तच्छृणुस्व वसुंधरे

अर्थ

सूर्य घाट में स्नान करै सूर्यनका दर्शन करै सूर्य लोक कोजाय कृतार्थ होजाय ॥ इस घाटमें प्राण त्यागे मेरे लोकको जाय और कहते हैं सो सुन हे पृथ्वी ॥

श्लोक

क्षेत्रं प्रस्कंदनं नाम सर्व पापहरं शुभं ॥ त
स्मिन्स्नातश्च मनुज सर्वपापै प्रमुच्यते ॥
अथात्र मुंचते प्राणान्मम लोकं सगच्छ
ति ॥ कालीयस्य हृदं गत्वा क्रीड़ा कृत्वाव
सुंधरे ॥

अर्थ

प्रस्कंदन घाट सूर्य घाट के पासहै ॥ सर्व पापके हरने-वा
लाहै ॥ इसमें स्नान करै सर्व पापसे छूटे प्राणत्यागे मे
रे लोक को जाय ॥ काली ह्रद में जाकर स्नान करै हे
पृथ्वी ॥

श्लोक

स्नानमात्रेण तत्रैव मुच्यते सर्वकि
ल्बिषैः अथात्र मुच्यते प्राणान्मम लोकं
सगच्छति उत्तरे हरिदेवस्य दक्षिणे का
लियस्यतु॥अनयोर्द्देवयोर्मध्ये मृतास्त्वे
त्व पुनर्भवा ॥

इति श्री वाराह पुराणे उत्तरार्द्धे मथुरा महात्म्ये-
ऽध्यायः ॥

सर्व पापसें छूटे प्राण त्यागे मेरे लोकको जाय॥ गो
वर्द्धन में हरि देव हैं और काली ह्रद इन दोनों के बीच
में जो मरते हैं ॥ उनका जन्म फिर नहीं होता ॥

इतिश्री बाराह पुराणे श्री दामोदर दासेण कृता
भाषायं॥

श्लोक

श्रीवाराहउवाच

तत्रगोपीश्वरो नाम महापातक नाशनः
कृष्णस्यरमणार्थं हि सहस्त्राणिच षोडशः
गोप्यो रूपाणिच कुश्चतत्रा क्रीडंति के
शवः ॥ यदा बालेन कृष्णेन भग्नार्जुनयु
गंतथा ॥

अर्थ

बाराहजी कहतेहैं गोपीश्वर हैं महापातक के नाशने वारे ॥ हजारों गोपी कृष्ण के रमने के वास्तें जन्मीहै जहां बाल स्वरूपी कृष्णने यमुला अर्जुन को मुक्त । किया है ॥ कुबेर के पुत्र थे नारदजी के शापसें वृक्ष हुए ॥

श्लोक

शंकटंच तथाभिन्नं घट भांड कुटीरकं ।
ताभिस्तत्रैव गोबिंदं बिक्रिडंतं यदृच्छया
॥परिष्वक्तोहि कृष्णेनव्याजेनैव सुगो
पितं ॥मातलिस्तत्रमागत्य देवै रुक्तं
यथोचितं॥

अर्थ

शकटा सुरका नाश किया मट्टी के बासन फूटे ॥ जि·

समें वासनरक्खे थे वोटूटे ॥ इनका नाश कर दामो
दर गोपनके बालकन सहित गोविन्द इच्छा पूर्वक
उसी जगह क्रीड़ा करते रहे ॥ मास्वन में लिपटे ऐ
सा जानकर देवतों ने मातली को भेजा मातली इन्द्र
का सार्थी है ॥

श्लोक

गोपवेश धरं देवमभिषेकंच कारह ॥ आ
नीय ससक लशानुरलौषधि परिस्तुता
न् ॥ गोपी मंडल पीठनस्थापि तो हेम कुं
डलः ः । गोप्यो गायंतिन्रत्यतक्षण मिति
भुवन ॥

अर्थ

गोपवेश धारी कृष्ण का अभिषेक किया सात कलशा
लाया स्वर्ग से अनेक औषधी लाया कलशान में
गोपीन का वृन्द है राही सिंहासन है ॥ इनके बीच में
सोने का कलशा रख दिये मातलीने गोपी गान नृत्य
करने लगी ॥

श्लोक

तत्र गोपीश्वरं देवं मातलिस्थाप्यपूजि

जितं॥ कूपंचस्थापयामास संगल्लैःक
लशैः शभैः॥ ससमुद्रिके कूपेयःश्रा
द्धं संप्रदास्यति॥ पितरस्तारितास्तेन कु
लानामेकसप्तति:॥

अर्थ

गोपीश्वर को मातलीनें स्थापन किये हैं और इन क
लशन के जलसें कूआ स्थापन कियाहै॥ बड़ा शभहै
सात समुद्रन का जल सप्तसमुद्रिक कूपमें जो श्राद्ध करै
गा उसने सात कुल के पित्रतारे सौ कुलतक तारे॥

श्लोक

सोमवारेत्वमावस्यां पिंडदानंकरोतियः
गयापिंडप्रदानंचकृतं तेनास्त्यत्रसंशयः
गोविंदस्यच देवस्यतथागोपीश्वरस्यच
मध्येतुमरणं यस्य शक्रस्येतिसलोकतां॥

अर्थ

सोमोती अमावस को जो पिंड दान करै ग या पिंडदानकि
ये उसने संशय नहीं॥ गोबिंद के और गोपीश्वरके म-
ध्यमें मरै इन्द्रलोक जाय॥

श्लोक

मथुरापश्चिमेभागेअर्द्धराद्धयोजने॥
कुंडंचवर्त्ततेतत्ररविमंडलमंडितं॥म
यातत्रतपस्तप्तं पुत्रार्थंचवसुंधरे॥दे
वकी गर्भ संभूतो वसुदेव गृहे शुभे॥

अर्थ

मथुरा के पश्चिम दो कोस पर शांतन कुंड है सूर्य के
मंडिल के माफिक मेंने जहां पुत्रके वास्ते तप कीया
है॥जन्म लेकर बसुदेव के शुभ घरमें॥

श्लोक

तत्रपुण्ये नहि मयार बिराराधितस्तदा
लब्धश्चशङ्खो मयापुत्रो रूपबानच गुणा
न्वतः॥१३॥ तत्रैव तु मया दृष्टाः पद्म
हस्तो दिवाकरः॥मासिभाद्रपदेदेवितिग
मतेजाबिभावसुःसप्तम्यां शुक्लपक्ष
स्यरविस्तिष्ठति सर्वदा तस्मिन्नहनियः
स्नानंकुर्यात्कुंडेसमाहितः॥१४॥

अर्थ

मैंने पुत्रपाया रूपवान गुणवान॥ उसीजगहमैंने सू
र्यको देखा कमल का पुष्प हाथ में लिये॥भादों

मास शुक्ल पक्षकी सप्तमी को सूर्य निवास करते हैं इस दिन जो स्नान करे सावधान होकर ॥

श्लोक

ततस्य दुर्ल्लभं लोके सर्वं दाता दिवाकरः
नरोवाप्यथवा नारी प्राप्नोत्य बिकलं फ
लं ॥ तत्रैव तपस्तप्तं राज्ञा संतनुना पुरा ॥
आदित्यं तु परः स्थाप्य प्राप्तो भीष्मो महा
बलः ॥ १६

अर्थ

जो बात दुर्ल्लभ है वो इसको दिवाकर देंयगे ॥ स्त्री-हो अथवा पुरुष अखंडित फल पावेंगे ॥ इसी जगह संतनु राजाने तप किया भीष्मजी पुत्र मिले ॥ शांतनु राजाने सांतनु कुंडमें सूर्य स्थापन किये हैं ॥ १६

श्लोक

संतनुः प्राप्य सत्पुत्रं गतो सो हस्तिनापुरं ॥
तत्र स्नानेन दानेन बांछितं फलमाप्नुयात्

इति श्री बाराह पुराणे मथुरा महात्म्ये अध्यायः

अर्थ

संतनु राजा सुपात्र पुत्र पाकर हस्तिना पुर गये॥ इस कुंड में स्नान दान करै वांछित फल मिलै॥

इति श्रीदामोदरदासेण कृताभाषायं

श्लोक

धरिरायुवाच

यथाविधानक्रमणान्माथुरायामवाप्य ते॥ प्रदक्षिणा फलं सम्यगनुक्रमविधी वद॥

श्रीवाराहउवाच

पुरास घर्षिभिः प्रष्टो ब्रह्मालोक पितामह॥ त्वसुमेवार्थमप्युक्तो यथात्वंप्रष्टवान्मम॥ श्रुत्वा सर्व पुराणोक्तं तीर्थानुक्रमणं परं॥

अर्थ

पृथ्वी वाराहजीसें मथुराकी परिक्रमा विधान फल सहित पूछतीहै वाराहजी कहतेहैं॥ पहिलें ब्रह्माजीसें पूछाया जैसें तूने हमसें पूंछाहै॥ पुराणनमें जैसा

बिधान कहाहै ॥ सोब्रह्मासे सुना ॥ ऋषीयों ॥

श्लोक

सर्वबेदेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलं ॥ स
र्वदानेषु यत्पुण्यं इष्टापूर्त्तेषु चैवहि ॥ फ·
लंतद्द्विगुणं प्रोक्तं मथुरायापरिक्रमं ॥ प्र
हृष्टा ऋषयोजग्मुरभिवंद्यस्वयंभुवं ॥

अर्थ

सर्व वेद पढ़नेसें जो फल सर्व तीर्थके स्नान सें जो फ·
ल सर्व दान देनेसें जो फल यज्ञ आदिक सें जो फल ता
लाव कुआ बागादिक सें जो फल इन सबों के फलसे
दूना फल मथुरा की परिक्रमासें होता है ऋषी ऐसा म
हात्म्य सुनकर खुशीहोकर ब्रह्माको नमस्कार कर ॥

श्लोक

आगत्य मथुरां देवि माश्रमाणि प्रचक्रमुः
कुमुदस्य तु मासस्य नवम्यां शुक्लपक्ष
के ॥ मथुरा परिक्रमा कृत्वा सर्वपापैः प्र
मुच्यते ॥ स्नात्वा बिश्रांति तीर्थे तु पितृ·
देवार्चनेरतः ॥ बिश्रांति दर्शनं कृत्वा दी
र्घ बिष्णुंच केशवं ॥